

# डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र २, आस्तिक तर्क, भाग 1, ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2, आस्तिक तर्क, भाग एक, ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क है।

ठीक है, पहला आस्तिक तर्क जिस पर हम नज़र डालने जा रहे हैं, वह ईश्वर के अस्तित्व के लिए ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क है।

सभी ईश्वरवादी तर्कों का उद्देश्य ईश्वर में विश्वास की तर्कसंगतता को साबित करना, उसका समर्थन करना या उसकी पुष्टि करना है, और ये तर्क पश्चिम में सदियों से इस्तेमाल किए जा रहे हैं, कम से कम प्लेटो के समय से। यह ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क ऐसा है जिसे सबसे पहले प्लेटो ने अपने एक काम द लॉज़ में तैयार किया था। अन्य तर्क जिनका इस्तेमाल किया गया है, और जिनमें से कई के बारे में हम बात करेंगे, उनमें टेलियोलॉजिकल तर्क शामिल है, जो कि डिज़ाइन से तर्क है। ईश्वर के अस्तित्व के लिए नैतिक तर्क, मन या चेतना से तर्क, ऑन्टोलॉजिकल तर्क, धार्मिक अनुभव से तर्क और चमत्कार से तर्क, और भी कई तर्क हैं। जिन पर हम गौर करेंगे वे हैं ब्रह्माण्ड संबंधी, टेलियोलॉजिकल तर्क, मन से तर्क और ऑन्टोलॉजिकल तर्क।

इसलिए, ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क से शुरू करते हुए, जिसे वास्तव में कांट ने नाम दिया था, उन्होंने ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क, उद्देश्य संबंधी तर्क और सत्तामूलक तर्क के नाम दिए। ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क का मूल विचार दुनिया के अस्तित्व से लेकर प्रथम कारण तक तर्क करना है, दुनिया के किसी प्रकार के अंतिम कारणात्मक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क का एक उदाहरण यह है कि यदि कुछ मौजूद है, तो कुछ अनिवार्य रूप से मौजूद है।

कुछ तो है ही; इसलिए, एक ज़रूरी अस्तित्व है। हम ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क के एक संस्करण को देखेंगे, जिसे कलाम तर्क कहा जाता है, जिसकी शुरुआत मध्यकाल में कुछ इस्लामी दार्शनिकों के साथ हुई थी। यह तर्क अद्वितीय है क्योंकि यह इस विचार पर केंद्रित है कि ब्रह्मांड की शुरुआत हुई थी, कि ब्रह्मांड की शुरुआत होनी ही थी।

तो, कलाम का ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क इस प्रकार है। पहला आधार यह है कि जो कुछ भी अस्तित्व में आता है, उसके अस्तित्व का एक कारण होता है, और ब्रह्मांड का अस्तित्व शुरू हुआ इसलिए ब्रह्मांड के अस्तित्व का एक कारण है। ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क के एक प्रमुख समर्थक अलेक्जेंडर प्राउस्ट हैं, और हम तर्क पर उनके कुछ विचारों को देखेंगे।

वह कलाम तर्क के संबंध में पूछे गए तीन बुनियादी सवालों को संबोधित करते हैं। पहला, क्या ब्रह्मांड की वास्तव में कोई व्याख्या है? क्या कोई ऐसी व्याख्या हो सकती है जिसमें कोई प्रथम

कारण शामिल न हो, और क्या ब्रह्मांड का प्रथम कारण ईश्वर होना चाहिए? तो, हम इन सवालों पर गौर करेंगे और देखेंगे कि प्राउस्ट इनसे कैसे निपटते हैं, इस सवाल से शुरू करते हुए कि क्या ब्रह्मांड का कोई प्रथम कारण होना चाहिए? ब्रह्मांड के प्रथम कारण होने के विचार से ईश्वरवाद की ओर बढ़ने की एक समस्या है जिसे अंतराल समस्या कहा जा सकता है। कलाम तर्क के समर्थकों के लिए यहाँ विचार यह है कि ब्रह्मांड की अंतिम व्याख्या वैज्ञानिक या यांत्रिक नहीं हो सकती।

यह एक व्यक्तिगत प्राणी होना चाहिए, इसलिए पहला कारण एक व्यक्ति होना चाहिए, इस प्रकार कुछ ईश्वर-जैसा होने का सुझाव देता है, क्योंकि ऐसा प्राणी न केवल अत्यंत शक्तिशाली होना चाहिए बल्कि असामयिक, अपरिवर्तनीय और अत्यंत बुद्धिमान या सर्वज्ञ भी होना चाहिए। जब आप उन सभी विशेषताओं को एक साथ रखते हैं, तो आपको शास्त्रीय ईश्वरवाद के ईश्वर जैसा कुछ मिलता है। अब, कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि, ठीक है, शायद एक और व्याख्या हो सकती है जो एक तरह का यंत्रवत कारण या व्यक्तिगत व्याख्या नहीं है, बल्कि वास्तव में एक संवैधानिक व्याख्या है जो यह समझाने के समान होगी कि किसी वस्तु को किसी दिए गए मामले में गर्म किया जाता है क्योंकि इसमें, मान लीजिए, उच्च गतिज ऊर्जा है।

यहाँ, हम वस्तु के अलावा किसी और चीज़ का उल्लेख नहीं कर रहे हैं, इस मामले में, इसकी गर्मी को समझाने के लिए। प्राउस्ट ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि एक संरचनात्मक स्पष्टीकरण, जो वस्तु के ही पहलुओं को अपील करता है, एक अंतिम स्पष्टीकरण नहीं है क्योंकि, जैसा कि उन्होंने कहा, मामलों की आकस्मिक स्थितियों के सभी अंतिम स्पष्टीकरण कारणात्मक होने चाहिए, न कि संरचनात्मक। और ऐसा इसलिए है क्योंकि हम हमेशा पूछ सकते हैं कि मामलों की एक संरचनात्मक स्थिति क्यों बनी रहती है या चाकू के मामले में, यह आखिर क्यों मौजूद है।

वहाँ, आपको किसी तरह के कारणात्मक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है या यह बताने की कि इसकी ऊष्मा को समझाने के लिए इसमें उच्च गतिज ऊर्जा कैसे आई। वहाँ किसी तरह का कारणात्मक स्पष्टीकरण होना चाहिए। इसलिए, संवैधानिक स्पष्टीकरण काम नहीं करेगा।

जब ब्रह्मांड की बात आती है, तो यांत्रिक कारणों का कोई मतलब नहीं रह जाता। इसलिए, किसी तरह की व्यक्तिगत व्याख्या होनी चाहिए। यही मूल विचार है।

लेकिन अब, हम पूछ सकते हैं, क्या कोई ऐसी व्याख्या हो सकती है जिसमें कोई प्रथम कारण शामिल न हो? और जो लोग यह प्रश्न पूछते हैं, वे दो में से एक मार्ग अपनाते हैं: या तो यह पूछना कि क्या कोई गैर-कारणात्मक अंतिम व्याख्या हो सकती है या फिर गैर-परम कारणों की एक श्रृंखला का हवाला देकर कारणात्मक व्याख्या दी जा सकती है, यानी एक कारणात्मक श्रृंखला जिसमें कोई प्रथम तत्व नहीं है, जो कि सीमित कारणों की एक आरंभहीन श्रृंखला है। इसलिए, जो लोग पहला मार्ग अपनाते हैं, यह दावा करते हुए कि कोई गैर-कारणात्मक अंतिम व्याख्या हो सकती है, वे आम तौर पर किसी प्रकार के आध्यात्मिक सिद्धांत या अंतिम ब्रह्मांडीय नियमों का आह्वान करेंगे। इसलिए, वे ब्रह्मांड के बाहर किसी इकाई या अस्तित्व के अस्तित्व को स्वीकार करने से बचने की कोशिश करेंगे जिसने ब्रह्मांड को जन्म दिया।

प्राउस्ट के अनुसार, यहाँ समस्या यह है कि यह वास्तव में असंगत है। ब्रह्मांड को समझाने के लिए अंतिम व्याख्या किसी वस्तु, किसी प्रकार के अस्तित्व की होनी चाहिए, क्योंकि सिद्धांत वस्तुएँ नहीं हैं; वे ऐसी इकाइयाँ नहीं हैं कि उनमें कोई कारणात्मक शक्ति हो। यह प्रकृति के नियमों के बारे में सच है जब हम व्युत्क्रम वर्ग नियम, गुरुत्वाकर्षण नियम या ऊष्मागतिकी के पहले या दूसरे नियम के बारे में सोचते हैं।

वे नियम वास्तव में सूत्र हैं; वे वर्णन करते हैं कि ब्रह्मांड में चीजें कैसे चलती हैं; वे ऐसी इकाइयाँ नहीं हैं, जैसे कि गुरुत्वाकर्षण किसी चीज़ का कारण बनता है। वास्तव में, यह एक खुला प्रश्न बना हुआ है। वह क्या है जो इस नियमितता को कारणात्मक रूप से समझाता है जिसे हम प्रकृति में देखते हैं? इसे बल कहना भी कोई स्पष्टीकरण नहीं देता।

ऐसा कोई तत्व या एजेंट या प्राणी अवश्य होना चाहिए जो इसे समझा सके, और ऐसा ही पूरे ब्रह्मांड के साथ भी होता है। कोई तत्व अवश्य होना चाहिए। एक आध्यात्मिक सिद्धांत एक कारणात्मक व्याख्या नहीं है। डेविड ह्यूम दूसरा रास्ता अपनाते हैं, जो गैर-परम कारणों की एक आरंभहीन श्रृंखला के विचार को अपील करता है।

उनका कहना है कि प्रत्येक आकस्मिक सत्ता का एक कारण हो सकता है जो कि एक अन्य आकस्मिक सत्ता है, और इसी तरह अनंत तक। इस प्रकार, किसी को एक परम, सर्वशक्तिमान सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है जिसने इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। इसलिए, यदि हम ब्रह्मांड के प्रत्येक भाग को किसी अन्य परिमित भाग से अपील करके समझा सकते हैं, और यह अंतहीन रूप से चलता रहता है, तो हर भाग की व्याख्या हो जाएगी, और हमें किसी परम कारण की अपील करने की आवश्यकता नहीं है।

प्राउस्ट कहते हैं कि यह समस्याजनक है क्योंकि जिस चीज को स्पष्ट करने की आवश्यकता है वह पूरी श्रृंखला ही है। आप किसी श्रृंखला को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं, आकस्मिक प्राणियों की एक कारण श्रृंखला, बिना किसी पहले सदस्य या एजेंट के जो पूरी श्रृंखला को आगे बढ़ाता है? वह एक तोप के गोले का उदाहरण देते हैं, जिसकी उड़ान को उसकी उड़ान के प्रत्येक क्षण से समझाया जा सकता है। गेंद की स्थिति को पिछली स्थिति से समझाया जा सकता है।

कुछ लोग इसे ह्यूम द्वारा यहाँ कही जा रही बात के अनुरूप बनाने की कोशिश करेंगे। लेकिन फिर, यह सवाल उठता है कि तोप के गोले की उड़ान की व्याख्या आखिर क्या है? यह कैसे चल पड़ा? यह हवा में कैसे उड़ गया? और यह तोप के गोले की उड़ान के लिए एक तरह की अंतिम व्याख्या है जो ब्रह्मांड की शुरुआत के समान है। आकस्मिक प्राणियों की यह कारण श्रृंखला सबसे पहले कैसे शुरू हुई? एक आरंभहीन श्रृंखला का कोई मतलब नहीं है।

यह कुछ ऐसा है जिस पर अरस्तू ने जोर दिया था, और उसके बाद से कई अन्य लोगों ने इस तरह के दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ उठाई हैं। तो, क्या ब्रह्मांड को भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता है? यह प्रश्न एक ऐसे सिद्धांत की आवश्यकता का सुझाव देता है जो अंतिम स्पष्टीकरण खोजने की हमारी इच्छा को समझाए। यहाँ किस तरह का सिद्धांत शामिल है? इसे पर्याप्त कारण का सिद्धांत कहा जाता है, जिसे कई अलग-अलग तरीकों से व्यक्त किया गया है।

प्राउस्ट का संस्करण यह है कि सभी आकस्मिक सत्य प्रस्तावों की व्याख्याएँ होती हैं। आकस्मिक सत्य वह है जो आवश्यक नहीं है। मान लीजिए, यह सच है कि इस कमरे में एक मेज है, लेकिन यह अन्यथा भी हो सकता था।

ऐसा भी हो सकता है कि इस कमरे में कोई टेबल न हो, जो कि ज़रूरी सत्यों के विपरीत है, जो कि झूठ नहीं हो सकते। जैसे कि त्रिभुज तीन भुजाओं वाला होता है या कुंवारा व्यक्ति शादीशुदा होता है। ये सभी बातें ज़रूरी तौर पर सच हैं।

वे झूठे नहीं हो सकते। और इसलिए, जब हम ब्रह्मांड के बारे में बात कर रहे हैं, तो कुछ ऐसा जो शायद अस्तित्व में नहीं था, वह एक आकस्मिक सत्य है। इसे क्या समझाता है? इसके लिए किसी तरह का कारणात्मक स्पष्टीकरण होना चाहिए।

पर्याप्त कारण के सिद्धांत के अनुसार, सभी आकस्मिक सत्यों के स्पष्टीकरण होते हैं। अब, ह्यूम की आपत्तियों में से एक यह है कि जब ब्रह्मांड के स्पष्टीकरण की आवश्यकता के विचार की बात आती है, तो यह तथ्य कि हम ब्रह्मांड या किसी भी चीज़ के शून्य से अस्तित्व में आने की कल्पना कर सकते हैं, या बिना किसी स्पष्टीकरण के, यह दर्शाता है कि यह संभव होना चाहिए। हम किसी भी वस्तु की अचानक अस्तित्व में आने की कल्पना कर सकते हैं।

इससे पता चलता है कि किसी न किसी तरह से ऐसा होना संभव है। हो सकता है कि ब्रह्मांड के साथ भी ऐसा हुआ हो। इसलिए शायद सभी चीज़ों के लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती।

शायद यहाँ पर्याप्त कारण का सिद्धांत गलत है। प्राउस्ट ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह वास्तव में हमारी किसी भी चीज़ के बिना किसी कारणात्मक शक्तियों के अस्तित्व में आने की कल्पना करने की क्षमता के संदर्भ में बहुत अधिक मांग करता है। हमें उस वस्तु के अचानक प्रकट होने पर किसी भी कारणात्मक प्रभाव की कमी की सफलतापूर्वक कल्पना करनी होगी जिसकी हम कल्पना कर रहे हैं।

इसलिए, प्राउस्ट का कहना है कि यह वास्तव में एक तरह का आत्म-धोखा है या जब हम किसी चीज़ की कल्पना करते हैं तो क्या हो रहा है, इसकी उचित समझ की कमी है। अगर हम सोचते हैं कि हम बिना किसी कारण के किसी चीज़ के अस्तित्व में आने की कल्पना कर सकते हैं, तो हम वास्तव में स्थिति की सच्चाई के प्रति वफादार नहीं हैं। इसलिए, वह कहेंगे कि ह्यूम इस मामले में गुमराह हैं।

तो, पर्याप्त कारण के सिद्धांत पर विश्वास करने के हमारे क्या औचित्य हैं? प्राउस्ट ने जो बातें कही हैं उनमें से एक यह है कि पर्याप्त कारण का सिद्धांत स्वयं-सिद्ध है। और यह स्पष्ट है, वह कहेंगे, इस तथ्य में कि कोई भी कभी भी यह सवाल नहीं करता है कि दैनिक जीवन में किसी घटना का कोई कारणात्मक स्पष्टीकरण है या नहीं। आप जानते हैं, यदि आप अपनी कार के पास जाते हैं और पाते हैं कि उसका टायर पंचर है, तो आप कभी इस संभावना पर विचार नहीं करते हैं कि शायद ऐसा नहीं हुआ, ऐसा होने का कारण नहीं था, यह बस अपने आप हुआ।

या अगर आपके बटुए या पर्स से पैसे गायब हो जाते हैं, तो आपको कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि शायद यह अपने आप गायब हो गया। नहीं, हमेशा कोई न कोई कारण होता है। हम जीवन के हर दूसरे संदर्भ में कारणों की तलाश करते हैं।

जब बात पूरे ब्रह्मांड की आती है तो हम ऐसा क्यों नहीं करेंगे? दूसरे, पर्याप्त कारण के सिद्धांत को नकारना हमारे बाकी ज्ञान और समझ को खत्म कर देता है। कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ कारण संबंधी स्पष्टीकरण काम नहीं आते, जैसे कि जब हम शुद्ध गणित कर रहे होते हैं। लेकिन जब बात बाकी जीवन और जांच-पड़ताल की आती है, तो हम कारण संबंधों के बारे में बात कर रहे होते हैं।

और दुनिया के बारे में हमारी समझ निश्चित रूप से विज्ञान और कई अन्य क्षेत्रों पर निर्भर करती है, इस विचार पर कि परिस्थितियों और प्राणियों के पास कारणात्मक स्पष्टीकरण हैं। इसलिए, यदि हम पर्याप्त कारण के सिद्धांत पर भरोसा नहीं कर सकते हैं या हम इसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो हमारे पास जो भी ज्ञान है, जो पर्याप्त कारण के सिद्धांत पर आधारित है, वह अंततः विफल हो जाता है। इसलिए, यदि हम पर्याप्त कारण के सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं या संदेह करते हैं, तो हमें बहुत कट्टरपंथी संशयवादी होना होगा।

अब, कुछ लोग शिकायत करते हैं कि ब्रह्माण्ड संबंधी बचावकर्ता असंगत हैं क्योंकि प्रथम कारण के अस्तित्व का अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त कारण के सिद्धांत को लागू करने के बाद, वे इसे त्याग देते हैं और दुनिया बनाने के लिए प्रथम कारण के चुनाव की व्याख्या करने से इनकार कर देते हैं। तो, सवाल उठता है: भगवान ने ब्रह्मांड को किस कारण से बनाया? अगर हम ब्रह्मांड के अंतिम कारण के रूप में भगवान से अपील करने जा रहे हैं और हम यहाँ कारण तर्क के लिए इतने प्रतिबद्ध होने जा रहे हैं, तो क्या हम बदले में यह नहीं पूछ सकते हैं कि भगवान के बारे में क्या? उन्हें ऐसा करने के लिए किस कारण से बनाया गया? यहाँ प्राउस्ट का उत्तर है कि भगवान ने दुनिया बनाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उनके पास कुछ मूल्य हैं और उन्हें पता था कि हमारी दुनिया इन मूल्यों या भगवान के उद्देश्यों को पूरा करेगी। इसलिए, हम भगवान के अपने इरादों या उद्देश्यों की अपील कर सकते हैं, लेकिन भगवान के पास जो मूल्य हैं, वे क्यों हैं, यह एक और सवाल है जो हम पूछ सकते हैं और कुछ लोग जवाब में पूछते भी हैं।

चार्ल्स प्राउस्ट कहते हैं कि किसी भी कारण से, ईश्वर उन चीज़ों को पसंद करता है जो वह करता है। उसके पास वे मूल्य हैं जो वह करता है। शायद हमें यह जानने के लिए एक विशेष रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है, और अगर हम शास्त्रों को देखें, तो मुझे लगता है कि हमें ईश्वर के अंतिम मूल्यों, ईश्वर किस तरह का है, के बारे में कुछ सुराग मिलते हैं, जो यह समझा सकता है कि उसने ब्रह्मांड क्यों बनाया और उसने मनुष्यों को इस तरह क्यों बनाया, लेकिन यह हमेशा ईश्वर की प्रकृति पर वापस जाता है, प्राउस्ट कहते हैं।

पर्याप्त कारण के सिद्धांत की पुष्टि करने से यह कहने की बाध्यता नहीं होती कि सभी स्पष्टीकरण अंततः जानने योग्य हैं और हम हर स्पष्टीकरण के बारे में सब कुछ जानते हैं। इसलिए, आप यह जान सकते हैं कि कोई प्राणी कैसे अस्तित्व में आया या किसने इसका कारण बनाया, बिना यह जाने कि वह व्यक्ति या चीज़ जिसने इसका कारण बनाया या वह चीज़ इसे कैसे अस्तित्व में लाई।

जिस चीज़ के लिए आप स्पष्टीकरण की तलाश कर रहे हैं, उसे जानने के लिए आपको पृष्ठभूमि की इन अन्य जानकारी को जानने की ज़रूरत नहीं है, कि इसका कारणात्मक स्पष्टीकरण है।

इसलिए भले ही हम दा विंची को नहीं जानते, हम यह भी नहीं जानते कि दा विंची ने मोना लिसा को क्यों चित्रित किया ; हम नहीं जानते कि क्या कोई वास्तविक व्यक्ति था जो उस नाम से जाना जाता था; कम से कम, मुझे नहीं लगता कि इतिहासकारों को यह पता है। इस बारे में अलग-अलग सिद्धांत हैं कि उन्होंने वह पेंटिंग क्यों बनाई, लेकिन हम अभी भी जानते हैं कि उन्होंने ऐसा किया था। इसलिए, आप इन अन्य विवरणों को जाने बिना किसी चीज़ की मूल कारण संबंधी व्याख्या जान सकते हैं। तो हम यह क्यों नहीं जान सकते कि भगवान ने ब्रह्मांड बनाया, भले ही हम सभी कारणों या शायद किसी भी कारण को न जानते हों?

विलियम लेन क्रेग कलाम तर्क के एक और प्रमुख समर्थक हैं, और वे और वेस मोरिसटन नामक एक अन्य दार्शनिक इस तर्क पर बहस करते रहे हैं। वेस मोरिसटन एक ईसाई दार्शनिक थे, लेकिन वे विशेष रूप से प्राकृतिक धर्मशास्त्र और आस्तिक तर्कों के बहुत आलोचक थे। वे कलाम तर्क और क्रेग के तर्क के विशेष बचाव के एक प्रमुख आलोचक थे।

इसलिए, हम कलाम तर्क के बचाव में क्रेग के कुछ तर्कों पर नज़र डालेंगे, खास तौर पर दूसरे आधार के बचाव में कि ब्रह्मांड का अस्तित्व शुरू हुआ। इसके बचाव में वह कुछ दार्शनिक तर्क और एक वैज्ञानिक तर्क देते हैं। इसलिए, अनंत अतीत के विचार के खिलाफ़ उनका पहला दार्शनिक तर्क यह है कि वास्तविक अनंत श्रृंखला मौजूद नहीं हो सकती।

समय में घटनाओं की एक आरंभहीन श्रृंखला एक वास्तविक अनंत श्रृंखला है; इसलिए, समय में घटनाओं की एक आरंभहीन श्रृंखला मौजूद नहीं हो सकती। वह लाइब्रेरी की किताबों की एक अनंत लंबी शेल्फ़ के इस सादृश्य का उपयोग करता है। मान लीजिए कि लाइब्रेरी की किताबों की इस शेल्फ़ पर, हर दूसरी किताब नीली है और हर दूसरी किताब लाल है।

तो, यह अनंत रूप से लंबा, अनंत रूप से लंबा, नीला, लाल, नीला, लाल, नीला, लाल, नीला, लाल, नीला, लाल और लाल है। हम तर्क के लिए मान रहे हैं कि आपके पास वास्तव में पुस्तकों की अनंत रूप से लंबी श्रृंखला हो सकती है। वहाँ पुस्तकों की कुल संख्या, निश्चित रूप से, अनंत होगी, लेकिन अब, उस श्रृंखला में नीली पुस्तकों की कुल संख्या कितनी होगी? यह भी अनंत होगी।

तो, किताबों की कुल संख्या का आधा हिस्सा उस श्रृंखला की पूरी किताबों की संख्या के बराबर होगा। इसका मतलब है कि एक विरोधाभास है जहाँ आधा हिस्सा पूरी संख्या के बराबर है। क्रेग का तर्क है कि इससे पता चलता है कि वास्तविक अनंत श्रृंखला के विचार में कुछ असंगति है।

तो यही वह बात है जो वह यहाँ कहना चाह रहे हैं। अब, वेस मॉरिस्टन की इस पर आलोचना यह है कि क्रेग का तर्क यूक्लिड के मैक्सिम नामक एक संस्करण को मानता है, जो कहता है कि किसी सेट में उसके किसी भी उचित उपसमूह की तुलना में तत्वों की संख्या अधिक होनी चाहिए। क्रेग यहाँ यही मान रहे हैं।

और मॉरिस्टन का तर्क है कि यह केवल परिमित सेटों के लिए ही सत्य है। लेकिन जब अनंत सेटों की बात आती है, तो यूक्लिड के मैक्सिम के संबंध में सभी दांव बंद हो जाते हैं। किसी भी मामले में, उनका कहना है कि यूक्लिड का मैक्सिम विवादास्पद है और इस पर बहस हो चुकी है।

इसलिए, इस बिंदु पर उनके बीच कुछ गतिरोध है। मॉरिस्टन यह भी बताते हैं कि ऐसे सेट के उदाहरण हैं जिनमें अनंत रूप से कई सदस्य हैं। उनका कहना है कि अंतरिक्ष के किसी भी सीमित हिस्से को अनंत रूप से उप-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है।

इसे आधा काटें, उस आधे को आधा काटें, उसे आधा काटें, और संभवतः अनिश्चित काल तक ऐसा करें। और अगर ऐसा है, तो क्या यह सुझाव नहीं देता कि एक छोटे, सीमित स्थान में भी अनंत संख्या में उप-क्षेत्र हैं? क्रेग का जवाब है कि यह केवल यह दर्शाता है कि अंतरिक्ष संभावित रूप से अनंत रूप से विभाज्य है। यह वास्तविक अनंत श्रृंखला के स्थानों को साबित नहीं करता है।

मॉरिस्टन का जवाब है कि अगर वे अलग-अलग क्षेत्र पहले से मौजूद न हों तो अंतरिक्ष उस तरह से अनंत रूप से विभाज्य नहीं हो सकता। अगर आपके पास वहां कोई स्पैन नहीं है या ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसे इस तरह से विभाजित किया जा सके तो आप विभाजन नहीं कर सकते। इसलिए, एक सीमित स्पैन की संभावित विभाज्यता दर्शाती है कि वहां वास्तव में कुछ अनंत उप-क्षेत्र हैं।

क्रेग अनंत अतीत के खिलाफ एक और दार्शनिक तर्क देते हैं। यह इस प्रकार है। समय में घटनाओं की एक श्रृंखला एक के बाद एक सदस्यों को जोड़कर बनाया गया संग्रह है।

एक के बाद एक सदस्य जोड़कर बनाया गया संग्रह वास्तव में अनंत नहीं हो सकता। इसलिए, समय में घटनाओं की एक श्रृंखला वास्तव में अनंत नहीं हो सकती। इस पर, मॉरिस्टन कहते हैं, निश्चित रूप से।

लेकिन उन्हें नहीं लगता कि यह उस श्रृंखला पर लागू होता है जिसकी कोई अस्थायी शुरुआत नहीं है। उनके विचार में, यह सब कुछ बदल देता है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, संभावित रूप से। ब्रह्मांड की कोई अस्थायी शुरुआत नहीं है, और इसलिए क्रेग की सोच यहाँ लागू नहीं होती है।

फिर क्रेग के पास अनंत अतीत के खिलाफ एक वैज्ञानिक तर्क है, जो बिग बैंग ब्रह्मांड विज्ञान का हवाला देता है। वह यहाँ रेडशिफ्ट का उल्लेख करता है, जिसकी खोज 20वीं सदी के पहले भाग में एडविन हबल ने की थी। उन्होंने रात के आकाश में देखते हुए देखा कि दूर के तारों, दूर की आकाशगंगाओं से आने वाला प्रकाश, प्रकाश स्पेक्ट्रम के लाल छोर की ओर बढ़ रहा था।

यह सुझाव देते हुए कि ये सभी खगोलीय पिंड दूर-दूर होते जा रहे हैं। यह एक तरह का ऑप्टिक डॉपलर प्रभाव है। और उन्होंने स्वाभाविक रूप से इससे यह निष्कर्ष निकाला कि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है।

और फिर, जैसे-जैसे और अधिक शोध हुआ, ब्रह्मांड कितना विशाल है, इस बारे में और अधिक खोज हुई, सैकड़ों अरबों आकाशगंगाएँ और सैकड़ों अरबों तारे, लगभग प्रकाश की गति से फैलते गए। इसलिए, अगर हम इसे फिर से देखें, तो चूँकि ब्रह्मांड अनंत तक नहीं फैलता है, संभवतः, तो परिमित अतीत में किसी बिंदु पर, ब्रह्मांड का सारा पदार्थ किसी तरह के परिमित हिस्से में समाहित रहा होगा। और फिर, किसी भी कारण से, यह प्रकाश की गति से विस्फोटित हुआ और तब से फैल रहा है।

लेकिन यहाँ विचार यह है कि ब्रह्मांड की शुरुआत अवश्य हुई होगी। और बिग बैंग ब्रह्मांड विज्ञानी कहेंगे कि, मुझे नहीं पता, 12 से 14 अरब साल पहले, बिग बैंग हुआ था। और इस बात पर अधिकांश, ब्रह्मांड विज्ञानियों का बड़ा बहुमत सहमत है कि यही हुआ था।

तो ब्रह्मांड का एक सीमित अतीत है। यही वह दृष्टिकोण है जो आज वैज्ञानिकों और ब्रह्मांड विज्ञानियों द्वारा अपनाया जा रहा है। और इसलिए यह कलाम तर्क के दूसरे आधार की एक तरह की सिफारिश है।

मॉरिस्टन का जवाब है कि, सबसे अच्छा, यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की संभवतः, बहुत संभावना है, एक शुरुआत थी। यह निश्चित रूप से इसे साबित नहीं करता है। और यह एक दोलनशील ब्रह्मांड की संभावना को खारिज नहीं करता है, जहाँ आपके पास विस्तार और संकुचन हैं जो अंतहीन रूप से चलते रहते हैं।

हालाँकि आजकल दोलनशील ब्रह्मांड सिद्धांत चलन से बाहर है, लेकिन मुझे लगता है कि मॉरिस्टन कहेंगे, जहाँ तक हम जानते हैं, यह सच हो सकता है। तो, क्या शुरुआत का कोई कारण होना चाहिए? क्रेग इस प्रश्न पर चर्चा करने में थोड़ा कम समय बिताते हैं, विशेष रूप से कलाम तर्क के पहले आधार पर, क्योंकि यहाँ बहुत कम विवाद है। कलाम तर्क के दूसरे आधार की तुलना में इस आधार पर बहुत कम चुनौती है।

क्रेग का कहना है कि हर वह चीज़ जो अस्तित्व में आती है, उसके अस्तित्व का कोई न कोई कारण होता है। हमने पर्याप्त कारण के सिद्धांत और यह मानने की बेतुकी बात की है कि कोई भी वस्तु अचानक, विशुद्ध और सरल तरीके से, शून्य से प्रकट हो सकती है। क्रेग बाघ का उदाहरण देते हैं।

यह मान लेना कि इस कमरे के बीच में अचानक एक बाघ प्रकट हो सकता है, बेतुका है। यह एक भयावह विचार भी है। लेकिन वह कहेंगे कि यह सहज ज्ञान युक्त प्रमाण है कि पूरा ब्रह्मांड बिना किसी कारण के अचानक प्रकट होकर अस्तित्व में नहीं आ सकता।

इसलिए, अगर हम किसी विशेष वस्तु या जानवर के मामले में उस प्रस्ताव की बेतुकी बात को पहचानते हैं, तो यह मान लेना कितना बेतुका है कि पूरा ब्रह्मांड पूरी तरह से और बस शून्य से अस्तित्व में आ सकता है? मॉरिस्टन का जवाब है कि हम बाघों के बारे में ऐसा मानते हैं क्योंकि वे ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका हम अनुभव करते हैं, लेकिन पूरे ब्रह्मांड के बारे में हमारे पास समान अनुभव नहीं है। इसलिए, उन्हें इस बात पर संदेह है कि क्या हम उस सीमा तक अनुमान लगा सकते हैं। कोई यह तर्क दे सकता है कि अगर बाघ या कुर्सी जैसी तुलनात्मक रूप से छोटी वस्तु

अचानक अस्तित्व में नहीं आ सकती है, तो हम यह सोचने के लिए और अधिक इच्छुक क्यों होंगे कि ऐसी वस्तुओं का पूरा ब्रह्मांड बिना किसी कारण स्पष्टीकरण के अचानक प्रकट हो सकता है?

अंत में, क्या पहला कारण कोई व्यक्ति होना चाहिए? क्रेग कहते हैं कि पहला कारण कोई व्यक्ति होना चाहिए क्योंकि यांत्रिक कारण तभी काम करते हैं जब प्रासंगिक परिस्थितियाँ मौजूद होती हैं। फिर से, यह एक ऐसा बिंदु है जिसे प्राउस्ट ने उठाया था, जैसा कि हमने देखा। लेकिन फिर, अगर यह इस तरह का कारण होता तो ब्रह्मांड की कोई शुरुआत नहीं हो सकती थी।

लेकिन ब्रह्मांड की शुरुआत तो हुई है, तो फिर कौन सा दूसरा कारण इसे अस्तित्व में ला सकता है? यह कोई व्यक्तिगत कारण रहा होगा। यह कारणात्मक व्याख्याओं की दूसरी मुख्य श्रेणी है। इसलिए, जिसने भी ब्रह्मांड बनाया है, उसे अत्यंत शक्तिशाली होना होगा, ब्रह्मांड बनाने का निर्णय लेना होगा, उसके इरादे होने चाहिए, और ब्रह्मांड को इस तरह बनाने के लिए अत्यंत बुद्धिमान और समझदार होना होगा कि यह जीवन की संभावना के लिए सही हो।

हम एक और तर्क, फाइन-ट्यूनिंग तर्क के बारे में बात करेंगे, जो इस पर केंद्रित है। आप इन सभी गुणों को एक साथ लेते हैं: शक्ति, बुद्धि, इरादे, और चुनने की क्षमता, और आप एक व्यक्तिगत प्राणी के साथ समाप्त होते हैं। ऐसा लगता है कि यह ब्रह्मांड के अंतिम कारण के रूप में एक व्यक्तिगत ईश्वर का चित्रण है।

मॉरिस्टन का जवाब है कि इससे यह समझाने में मुश्किलें आती हैं कि ईश्वर की इच्छा से की गई रचना उसके लिए पर्याप्त कैसे थी। और यह एक आकर्षक विचार है। ईश्वर ने ब्रह्मांड कैसे बनाया? वह एक आत्मा है।

यह एक भौतिक ब्रह्मांड है। यह निश्चित रूप से ब्रह्मांड की प्रकृति, पदार्थ या ऊर्जा की प्रकृति और एक आत्मा के रूप में ईश्वर कैसे ब्रह्मांड को ला सकता है, के बारे में सवाल उठाता है। और निश्चित रूप से इसमें कठिनाइयाँ हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि क्रेग का जवाब होगा कि सिर्फ इसलिए कि इसे समझने में वैचारिक कठिनाइयाँ हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम इस बात पर आश्वस्त नहीं हो सकते कि ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के पीछे कोई पारलौकिक, अति-शक्तिशाली, बुद्धिमान कारण था। तो यह ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क है जिसमें तर्क के कलाम संस्करण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके शिक्षण में है। यह सत्र 2, आस्तिक तर्क, भाग एक, ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क है।